* सरस ज्ञान वैराग्य भक्ति योग प्रतिपादिका *

श्री स्वामी शिवानन्द भजनमाला

का

द्वितीय पुष्प

—रचयिता—

स्वामी शिवस्वरूप

कविरत्न, संगीत-सुधाकर, अध्यापक, स्वामी शिवानन्द संगीत विद्यालय, आनन्द कुटीर,

मुनि-की-रेती, ऋषिकेश

मूल्य] [१)

प्रकाशकः—
श्री स्वामी चिदानन्द सरस्वती
दि शिवानन्द पब्लिकेशन लीग,
शिवानन्द नगर,
॥ ऋषिकेश ॥
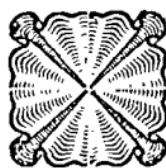
प्रथम संस्करण — १००० — १९५१
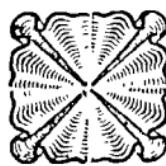
मुद्रकः—
विज्ञान प्रेस,
ऋषिकेश (जिला देहरादून)

श्री १०८ श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य

श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

जिन भक्तों के मन-भ्रमर सतत् श्री हरि के गुण-यश
रूपी पुष्पों के मकरन्द का आस्वादन करते
रहते हैं उन संगीत-प्रेमी भक्तों
को सादर समर्पित ।

कविरत्न संगीत सुधाकर स्वामी शिवस्वरूप जी

* हरिः ॐ तत्सत् *

॥ भूमिका ॥

इस कलिकाल में भगवत भजन कीर्तन ही लोक और परलोक में कल्याण कारक हैं।

जैसे—सतयुग में ध्यान, त्रेता में यज्ञ, द्वापर में पूजन, तथा कलि में केवल प्रेम भक्ति से श्री हरि के मङ्गलमय नामों का जप तथा कीर्तन एवं सुन्दर लीलामृतमय-यश गुणों को ललित कला द्वारा गान करके ही मनुज इस लोक में आनन्द मय जीवन व्यतीत कर अन्त में इस दुस्तर संसार सागर से पार हो जाता है।

इसी बात को ध्यान में रखते हुये भगवत भजन प्रेमी जनों के उत्साह तथा आनन्द को बढ़ाने के लिये यह सरस ज्ञान वैराग्य भक्ति योग प्रतिपादिका श्री स्वामी शिवानन्द भजन माला का द्वितीय पुष्प कवि रत्न सङ्गीत सुधाकर स्वामी शिवस्वरूप जी से सम्पादित कराकर प्रकाशित किया जा रहा है।

इस माला का प्रथम पुष्प कुछ समय पहिले प्रकाशित हो चुका है। इसी तरह और पुष्प भी यथा समय प्रकाशित होते रहेंगे। इस माला के द्वितीय पुष्प में सरस ज्ञान वैराग्य भक्ति योग के चुहचुहाते हुये भजन संयोजित किये गये हैं जिसको साधारण लय और ताल का ज्ञान रखने वाला भी सरलता पूर्वक अकेला ही अथवा सङ्गीत सम्बन्धी साजों के सहित प्रेमी भक्त सज्जन समूह के संग में गान कर स्वयम् आनन्द का भाजन बन दूसरों को भी आनन्द प्राप्त करा सकता है।

सङ्गीत में प्रेम तथा भक्ति का प्रधान स्थान होने के कारण
ःवि ने भगवान् के प्रेम भक्ति को प्रतिपादन करने वाले ही उत्तम
ाब्दों तथा अलङ्कारों का विशेषता से प्रयोग कर भगवत
ुणानुवाद रूप भजनों को भूषित करते हुये भगवान् के
ाश्व मोहक यश गुणों को गान करने वालों तथा श्रोतागणों
ो अनन्त शक्ति वाले अपने प्रभु का स्मरण कराकर भगवत
ानन्दानुभव कराने का यथाशक्ति प्रयत्न किया है।

इस पुष्प के सम्पादन करने में श्री पण्डित राघवाचार्य्य
ास्त्री जी संस्थापक श्री दर्शन महाविद्यालय से जो विशेष
हायता ली गई है उसके लिये श्री पण्डित जी महाराज
न्यवाद के पात्र हैं।

अब पाठक महानुभावों से विनीत प्रार्थना है कि इस श्री
ामी शिवानन्द भजन माला के द्वितीय पुष्प में यदि कुछ
ापेखाने आदि की त्रुटियां रह गईं हों तो उस पर ध्यान न
ते हुये कृपया भगवत गुणानुवाद समझ कर प्रेम से अपनायेंगे
ासे लेखक और हमारा परिश्रम सफल होगा।

॥ इतिशम् ॥

आपका—शुभचिन्तक

स्वामी चिदानन्द

मन्त्री—शिवानन्द पब्लिकेशन लीग

ऋषिकेश।

श्रीकृष्णाय नमः श्री गणेशाय नमः श्री महालक्ष्म्यै नमः

ब ऋद्धि सिद्धि देते जन को
विद्या बुद्धि गण राज तुम्हीं।
ज वदन विनायक भक्तों के
पूरण करते सब काज तुम्हीं ॥ टेक ॥ स…

ो कृपा सिन्धु तुम वर दायक
मुनि जन नित ध्यान धरें मन में।
व विघ्न हरण मङ्गल दाता
सब देवों के शिर ताज तुम्हीं ॥१॥ स…

ट राज राज के सुमन सुभग
गिरि राज राज तनया के तनय।

षड़ वदन सहायक सब लायक

हो भूषण के सब साज तुम्हीं ॥२॥ स…

शरणागत वत्सल जन रक्षक

डमरू त्रिशूल कर में धारे।

गाते तुमरे गुण गण निशि दिन

उन शिवानन्द की लाज तुम्हीं ॥३॥ स…

" सत्सङ्ग "

* भजन *

दया कर दान भक्ति का हमें परमात्मा देना

सुजन सत्सङ्ग ही जग में
सकल गुण गण कि खानी है ।
सभी गुनिजन वो मुनियों के
यही मन में समानी है ॥१॥ सुजन…

बिना सत्सङ्ग के जन को
नहीं विश्वास होता है ।
सुधर जाते हैं शठ नर भी
ये सब ने बात मानी है ॥२॥ सुजन…

बड़ी है साधु की महिमा
किसे सामर्थ्य कहने की ।
सकुच जाती है विधि हरि हर
सुकवियों की भी वाणी है ॥३॥ सुजन…

परम मङ्गल को देता है
समागम सन्त पुरुषों का ।
जहां हरि हर कथा सरिता
बहाती स्वच्छ पानी है ॥४॥ सुजन…

समझ सुन कर यही बुध जन
सदा स्नान करते हैं।
महत सत्सङ्ग की गङ्गा
परम पद की निशानी है ॥५॥ सुजन'

नहीं तत्काल फल देता
कोई सज्जन समागम सा।
'शिवानन्द' सार है जग में
यही भक्तों ने जानी है ॥६॥ सुजन'

* भजन *

बजा तुम प्रेम से मुरली
मधुर मन को लुभाते हो।
तुम्हीं सब संग ग्वालों को
लिए माखन चुराते हो ॥१॥ बजा'''

तुम्हीं गो—गोप के मन में
तुम्हीं ग्वालिन के भी संग में।

कहीं व्रज में कहीं रण में
तुम्हीं गीता सुनाते हो ॥२॥ बजा···

तुम्हीं अवतार धारन कर
करो निज भक्त की रक्षा।
जगत कल्याण के कारण
तुम्हीं तन धर के आते हो ॥३॥ बजा···

तुम्हारी मोहनी माया से
सब जग नित रहे मोहित।
इसी से सब को कर के मुग्ध
निज महिमा छिपाते हो ॥४॥ बजा···

न चित आते हो जप तप से
न मिलते योग ही मख से।
हो वश में प्रेमियों के
तुम ही जीवन-धन कहाते हो ॥५॥ बजा···

धरें धरो नित ध्यान शिव-आनन्द
ऋषि मुनि जन सभी मन में।
न पाते पार गुण यश का
तुम्हीं मुझ से गवाते हो ॥६॥ बजा···

क्रिये श्री राम का स्मरण

* भजन *

कहूं अब मैं परम बानी
जो नित कल्याणकारी है।
सुनो तुम प्रेम से अर्जुन
सुखद सुनने में प्यारी है ॥१॥ कहूं...

मुझे जो अज अनादी लोक
ईश्वर मान लेते हैं।
उन्हीं की शीघ्र कट जाती
सभी पापों की बारी है ॥२॥ कहूं...

सुबुद्धि ज्ञान शम और दम
क्षमा वो सत्य का पालन।
मरण वो जन्म यश अपयश
अभय समता भि न्यारी है ॥३॥ कहूं...

छुटाकर पाप से जन को
सुभग जीवन बनाती है।
भ्रमाती है सभी जग को
यही माया हमारी है ॥४॥ कहूं...

सभी का मैं हि स्वामी हूं।
मुझी से सब प्रगट होते।
भजन करते हैं मेरा ही
जिन्हों ने भक्ति धारी है ॥५॥ कहूं...

लगाकर चित्त को निशि दिन
तथा प्राणों को भी अपने।
रमण करते हैं गुण गाकर
जो भव भय दुःख हारी है ॥६॥ कहूं...

करूं उद्धार मैं उनका
उछलते दुःख सागर से।
शिवानन्द भक्त हैं मेरे
जो मेरे ही पुजारी हैं ॥७॥ कहूं...

※ भजन ※

ये हरिपद पद्म भव तरणी
है ऋषि मुनि देव ने गाई।
वो निकसी सुरसरी जिन से
जगत पावन को है आई ॥टेक॥ ये हरि॰॰

कमल दल नयन मनमोहन
त्रिभङ्गी ललित सुन्दर धन।
जो पद पङ्कज है शङ्कर धन
वही भक्तों का सुखदाई ॥१॥ ये हरि॰॰

जो हरि पद पद्म को पद्मा
नहीं क्षण मन से बिसराये।
सोई पद पद्म व्रज बनिता
परसि सुत सदन बिसराई ॥२॥ ये हरि॰॰

जो पद प्रहलाद मन वच क्रम
पिता के त्रास चित धारे।
सोई पद रज परसि पावन
है गौतम नारि हर्षाई ॥३॥ ये हरि॰॰

जिन्हीं पद पद्म पाण्डव दल में
जा कर काज सब सारे।
उन्हीं चरणों को शिव–आनन्द
नित रहता है लवलाई ॥४॥ ये हरि···

[५]

किये जा राम का स्मरण

* भजन *

हमें क्यों नाथ तुम भूले हो
सुधि लो श्याम बनवारी।
निभा लो बांह गहने की
तुम्हीं को लाज है सारी ॥१॥ हमें···
भरोसा और का मुझको
नहीं बस यक तुम्हारा है।
पड़ा हूं द्वार पर तेरे
मेरी भी आयेगी बारी ॥२॥ हमें···
तुम्हीं दाता हो सब जग के
तुम्हीं पालन करो जग का।

तुम्हीं हरते हो दुख सब का
बजा कर बांसुरी प्यारी ॥३॥ हमें

उबारे कौन भव दुख से
तुम्हें तज और मनमोहन।
हते पाण्डव के हित कौरव
बचाई द्रोपदी नारी ॥४॥ हमें

तुम्हीं हो प्रीति रस रीती
प्रिया भी और प्रियतम भी।
तुम्हीं सनमान हो सतकार भी
अनुराग सुखकारी ॥५॥ हमें

अनेकों पतित हैं तारे
सभी के दूर कर कलिमल।
शिवानन्द कह रहे हैं
प्रीति की है रीति ही न्यारी ॥६॥ हमें

---

* भजन *

दो दिन है मेला आज गया कोई तड़के॥ टेक॥ दो दिन···

इस नगरी की रीति यही है
रहा न कोई न मरके
पुण्यवान सुख से जाते हैं
पापी जाय पकड़के ॥१॥ दो दिन···

सब को ही जाना पड़ता है
बूढ़े हों या लड़के।
उसका भी कुछ वश नहिं चलता
चलता जो खूब अकड़के ॥२॥ दो दिन···

दाता का ऊँचा है आसन
जाता लोक है परके।
लेने वाला कृपण अधोमुख
रहता है नीच अधरके ॥३॥ दो दिन···

बड़े—बड़े बल वाले आये
सुन्दर सँवर सुघड़के।

क्षण में रङ्ग बिगड़ जाते हैं
चलते रहो ज़रा डरके ॥४॥ दो दिन

यक प्रसन्न हो कर हँसता
यक रोता है जी भरके।
जगत – तमाशा देख लिया
अब चलो इहां कुछ कर के ॥५॥ दो दिन...

माल वहां से लाये थे
सो खाते खूब कचर के।
इहां से जो शुभ फल ले जाते
वोही कहलाते हैं हर के ॥६॥ दो दिन...

राम भजन बिन जीवन जिनके
रहे न घाट न घर के।
आये शरण शिवानन्द हरि की
जाय कहां अब टर के ॥७॥ दो दिन...

* भजन *

जग में सब से कर्म बढ़ कर दान है।

शूर वीरों की यही नित आन है ॥१॥ जग में···

वाक्य शूरों की बड़ाई बात से।

दान वीरों की इसी में शान है ॥२॥ जग में···

कृपण को धन जोड़ने का ही है राग।

दानियों को दान की ही तान है ॥३॥ जग में···

कर्म जितने हैं सभी होते सरल।

दान का करनाहिं एक महान है ॥४॥ जग में···

अङ्ग तो करते हैं कितने धर्म के।

दानियों को दान का ही ध्यान है ॥५॥ जग में···

लोग जितने हैं शिवानन्द जगत के।

सबहि करते दान का सनमान है ॥६॥ जग में···

"माया"

* भजन *

[ताल दादरा]

नचाय रही है माया तोरी सँवरिया ॥ टेक ॥ १ ॥

शेर—महाबली है जग को
वश में अपने करती है।
ज़रा ये देख मुस्करा
के मन को हरती है।
मुनि नारद भि मग्न
हो गये मति बल खो कर।
बारह कन्या वो
पुत्र साठ थे प्रबल होकर ॥
लगाये रही है सब को अपनी डगरिया ॥२॥ नचाये···

शेर—धर्म सब छोड़ उसी
रूप में हिं जग राचा।
ठगे सभी को नहीं
कोई इससे है बांचा।

प्रभाव शुक सनक

आदिकभि जान कर भागे।

छूट गइ लाज काम

क्रोध मन में आ जागे॥

लुभाये रही है सब के मन को सुन्दरिया ॥२॥ नचाय…

शेर—अकथ कथा है

शिवानन्द कहां लो गाये।

रहे छाया की तरह

छैल जनों को भाये।

करे अभिमान गलित ऋषि

विधि सुर नर मुनि के।

सोये सुख नींद जो जाये

वहां भि यह सुन के॥

दिखाय रही है सब को तिरछी नजरिया ॥४॥ नचाय…

On the 65th Birthday celebrations of
Sri Swami Sivanandaji Maharaj
presented by Swami Sivaswaroop
on 8th September 1951.

※ भजन ※

शुभ घड़ी मुहूरत जन्म दिवस
श्री शिवानन्द का आया है।
उपदेश कथामृत नाटयकला
बहु राग रंग संग लाया है ॥ टेक ॥ शुभ…

आनन्द कुटी सत्संग सदन हैं
कुण्ड हवन सब साज सजे।
संगीत लाउड स्पीकर से
अतिशय सब के मन भाया है ॥१॥ शुभ…

शुभ गन्ध पुष्प फल पत्रों से
सारा उद्यान सुशोभित है।
श्री विश्वनाथ मन्दिर सुषमा लखि
सब का मन हर्षाया है ॥२॥ शुभ…

विधिवत पूजन वन्दन करके

बहु व्यंजन सजकर भोगलगे।

शृङ्गार सहित शिव दर्शन ने

सबका मन मुग्ध बनाया है ॥३॥ शुभ···

हरि ललित कथा श्रुति मधुर

सामध्वनि से मण्डप गुंजार रहे

भाषण कर श्री स्वामी जी ने

आनन्द सरस वर्षाया है ॥४॥ शुभ···

वक्ता श्रोता उपदेशक गण जब

ब्रह्म ध्यान में मग्न हुये।

तब शिष्य सहित श्री राघव ने

आ प्रेम पन्थ दर्शाया है। ॥५॥ शुभ···

सत्संग के संगी सदस्य गण

हैं समारोह में जो आये।

आदर पाकर सम्मान सहित

मिल प्रभु प्रसाद को पाया है ॥६॥ शुभ···

जन्मोत्सव स्वामी शिवानन्द जी के

शुभ दिन शुभ अवसर पर।

कहैं शिवानन्द रमणीय गान
प्रिय शिव स्वरूप ने गाया है ।।७।। शुभ··

कर्म अकर्म

[१०]

* भजन *

जो अकर्म में सब कर्मों को
कर्मों में अकर्म कहते हैं।
हैं वही कर्म करने वाले
जो कर्मयोग युत रहते हैं ।।टेक।। जो·

आरम्भ सभी बिन इच्छा के
जिनके संकल्प बिना होते।
नित ज्ञान अग्नि से दग्ध कर्म
साधक को पण्डित कहते हैं ।।१।। जो·

जो त्याग कर्म फल इच्छा को
नित तृप्त निराश्रय ही रहते।
वो कर्म सभी करते रह कर
भवसागर में नहिं बहते हैं ।।२।। जो··

मन वश में कर जिसने त्यागा

आशा अरु सर्व परिग्रह को।

केवल शारीरक कर्म किये

भव तापों से नहिं दहते हैं ॥३॥ जो···

जो यथा लाभ संतुष्ट हुये

निर्द्वन्द्व रहें मत्सर तज कर।

कर्मों की सिद्धि असिद्धी में

समता को ही जो गहते हैं ॥४॥ जो···

कहें शिवानन्द है ब्रह्म जगत

जब यही दृष्टि हो जाती है।

वह ब्रह्म लीन सब कर्म त्याग कर

नित्य ब्रह्म गति लहते हैं ॥५॥ जो···

---

* भजन *

भजता हूं मैं भी उसी तरह
जो जैसे मेरा भजन करे।
जो बुद्धिमान जन है जग में–
मेरे पथ पर ही सदा चरे ॥ टेक ॥ भजता...

इस कर्म क्षेत्र में कर्मों की
अति शीघ्र सिद्धि हो जाती है ॥
जिस फल कि भावना हो मन में
वैसे फल दायक देव–वरे ॥१॥ भजता...

चारों ही वर्णों की सृष्टी का
मैं ही रचने वाला हूं।
गुण कर्म विभाग रहे उनमें
जैसे जिसने भी चित में धरे ॥२॥ भजता...

इच्छा नहिं कर्मों के फल की
जिससे वो मुझे नहीं होते।
ऐसा हि जान के जन मुझको

फिर कर्म बन्ध में नहीं परे ॥३॥ भजता···

पहिले से ही है कर्म किया

सब मुक्ति चाहने वालों ने।

तुम भी ऐसे ही कर्म करो

भव बाधा जिससे सभी टरे ॥४॥ भजता···

इस कर्म अकर्म के निश्चय में

हैं बुद्धिमान भी चकराते।

इसका निर्णय कहता हूँ मैं

अर्जुन जो संशय सकल परे ॥५॥ भजता···

जो कर्म अकर्म वो विकर्म है

इनके हि तत्व को पहिचानो।

कहें शिवानन्द है गहन कर्म गति

जो सुख दुख फल अमित फरे ॥६॥ भजता···

---

* भजन * (राग जौनपुरी)

यह राम नाम ही भक्तों को
सुख सरस सुधा बरसाता है।
श्री कृष्ण नाम का उच्चारण
आनन्द परम दरशाता है ॥१॥ यह...

जो राम कृष्ण गुण गाते हैं
वो सब जन के मन भाते हैं।
उनके पद रज शिर धारण को
देवों का मन ललचाता है ॥२॥ यह...

जिसने प्रभु को नहिं पहिचाना
उसने अपना हित नहिं जाना।
सुखमय हरिपद तज कर नर वो
भव दुख पाकर पछताता है ॥३॥ यह...

मुनिवर भी प्रभु के गुण गाते
बिन तृष्णा के जो कहलाते।
भव औषध मन श्रुति सुखदायक
गुण गा कर नर तर जाता है ॥४॥ यह...

हरि गुण गा कर हर्षाय
हरि मूरति जिसके मन भाये।
कहें शिवानन्द वो जन जग में
चारोहि पदारथ पाता है ॥५॥ यह···

[१३]

(आहें न भरी छिकवे न किये ---) *** भजन *** कव्वाली

तुम वश में रहा करते उनके.
तुमरे गुण गण (गान) जो गाते हैं।
कर पान ललित लीलामृतका
फिर पीते नहीं अघाते हैं ॥१॥ तुम···
तुमरे दर्शन के हेत लगी
रहती हरदम अँखिया जिनकी।
जो सकल भाव तज कर मन से
तुमको ही हृदय बसाते हैं ॥२॥ तुम···
हो स्वामि सखा जिनके तुमहीं
गुरू मात पिता तुमको माने।

निश्चय गति हो जिनकी तुमहीं
छल कपट न जिनको भाते हैं ॥३॥ तुम...

सबके प्रिय सबके हितकारी
जो दुख सुख को सम कर जानें।
पर धन जिनको विष के सम है
पर नारि नहीं तन लाते हैं ॥४॥ तुम...

नहिं मान दम्भ जिनके मन में
अवगुण तज सबके गुण कहते।
नित भाव सहित अर्पण करके
जो प्रभु प्रसाद को पाते हैं ॥५॥ तुम...

गति और नहीं जिनकी कोई
जो चरण कमल के चेरे हैं।
कहैं शिवानन्द प्रभु यश सुनकर
जो प्रेम मग्न हो जाते हैं ॥६॥ तुम...

---

[१४]

* भजन *

फिर मोह नहीं होगा जग में
इस ज्ञान तत्व को पाने से।
सेवा परि प्रश्न से पावोगे
ज्ञानी जन के समझाने से ॥ टेक ॥ फिर···

पापियों से बढ़कर भी पापी
अपने को अगर समझते हो।
तर जावोगे सब दुःखों का
नित ज्ञान नाव चढ़ जाने से ॥१॥ फिर···

प्रज्वलित अग्नि ज्यों इन्धन को
अति शीघ्र भस्म कर देता है।
होता वैसे ही कर्म भस्म यह
ज्ञान अग्नि चित लाने से ॥२॥ फिर···

नहिं ज्ञान सदृश निर्मल कोई भी
और वस्तु है इस जग में।
कुछ काल से इसको पावोगे
तुम स्वयं सिद्धि के आने से ॥३॥ फिर···

जो इन्द्रिय जित श्रद्धालू हैं
इस ज्ञान को वो ही पाते हैं।
फिर परम शान्ति सुख मिलता है
नित ज्ञान कि गङ्ग नहाने से ॥४॥ फिर॰

अज्ञानी श्रद्धा हीन मनुज
सन्देह सहित जो रहता है।
वो उभय लोक से गिरता है
सँशय को अधिक बढ़ाने से ॥५॥ फिर॰

जो ज्ञानवान संदेह रहित
प्रभु अर्पण कर सब कर्म तजे।
वो बन्धन में नहिं आता है
फिर आत्म तत्व पहिचाने से ॥६॥ फिर॰

इस लिये सभी सँशय मन के
तुम ज्ञान शस्त्र से दूर करो।
कहें शिवानन्द यश पाता है
जग में रण शूर कहाने से ॥७॥ फिर॰

———

* भजन *

राम से ही प्रीति हो मन
राम का आधार हो।
तन-कि-तँत्री राम बोले
राम जीवन तार हो ॥१॥ राम से···

फूल की मानिन्द खुशबू
जग में फैला के तु रह।
कर भलाई सब किसी की
राह का मत खार हो ॥२॥ राम से···

हो नहीं जाये बुरा तुझ से
किसी भी जीव का।
डर के रह जग में कहीं
जीवन न यह बेकार हो ॥३॥ राम से···

डारि पासा साधु संगति
चाहता जो जीतना।

दाव ऐसा परे पूरा
जो न तेरी हार हो ॥४॥

टार देते हैं नहीं प्रभु
शरण आये को कभी ॥४॥ राम से...

राम पद 'पङ्कज' तरणि ले
भव जलधि के पार हो ॥५॥ राम से...

छोड़ शिव-आनन्द प्रभु का
क्यों भटकता दर बदर।
तू बने अनमोल तुझको
राम से जो प्यार हो ॥६॥ राम से

---

* भजन *

जो बीत जाने पर समय
तुमने दया भि किया तो क्या ।
हो आप दीनदयाल प्रभु जन
दुखित जग में जिया तो क्या ॥टेक॥ जो…

जब तक रहा जीवित फिरा
घर-घर में सब से माँगता ।
तन छूट जाने पर उसे
मणिमाल भी जो दिया तो क्या ॥१॥ जो…

दाता वो क्या जग में जिसे
नहिं दीन पर आती दया ।
जो भक्ति धन वालों को ही
तुमने शरण में लिया तो क्या ॥२॥ जो…

सब और जल को तज के चातक
स्वाति जल को चाहता ।
…

है आस जलधर की हि
उसको और जल जो पिया तो क्या ॥३॥ जो··

जो है लगन सच्ची जिसे
वो छूट जाती है नहीं।
कहें शिवानन्द तुमने हृदय
अपना कठिन जो किया तो क्या ॥४॥ जो··

* भजन *

[१७]

झूठा है ये जमाना इसमें
न मन लगावो।
उस श्याम सलोने से
अपनी नजर मिलावो ॥टेक॥ झूठा··

जग है अजब तमाशा
मन को लुभा रहा है
अपनी चमक दमक से

जो चम चमा रहा है।

यह ख्याल का चमन है

हरगिज़ न इस पै जावो ॥१॥ झूठा···

दो दिन कि चाँदनी है

आखिर है फिर अन्धेरा।

बजता है कूच का अब

डँका हुआ सवेरा।

सोये हुए अभी तक

अपना हृदय जगावो ॥२॥ झूठा···

क्या बेच बाच कर सब

सामान सो रहे हो।

स्वाँसा अनमोल अपने

क्षण—क्षण में खो रहे हो।

बहु यत्न से जो पाया

उसको न यूँ लुटावो ॥३॥ झूठा···

सुन्दर ये स्वप्न तुमको

माया दिखा रही है।

राजा फकीर रानी का
स्वाँग ला रही है।
आधार जो है सब का
उसको नहीं भुलावो ॥४॥ झूठा...

सब लोक लाज तज कर
बन प्रेम के पुजारी।
फिर हर्ष से कहो तुम
मोहन मदन मुरारी।
सच्ची लगन लगा कर
अपनी उसे बुलावो ॥५॥ झूठा...

कहते हैं श्री शिवानन्द
सब कुछ ठगों ने लूटा।
अब तक न तुमने सोचा
ये जग सभी है झूठा।
जो सब से है अनूठा
गा कर उसे रिझावो ॥६॥ झूठा...

* भजन *

मोहन अधर पै धर के
बंशी बजा रहे हैं।
सखि भर के स्वर मधुर धुन
कैसी सुना रहे हैं ॥टेक॥ मोहन···

सुन्दर छवी मनोहर
मन को लुभा रही है।
बाँकी अनोखी चितवन
चित को चुरा रही है।
पट पीत हैं तड़ित से
भूषण सुहा रहे हैं ॥१॥ मोहन···

कुँचित अलख है मुख पर
अलि माल सी सुहाती।
मुस्कान मन्द घन में
ज्यों दामनी दिखाती।

मृग मीन खंजनों के
लोचन लजा रहे हैं ॥२॥ मोहन

घनश्याम के करों में
मुरली सुखद बिराजे।
नव रस को साथ लेकर
सुन्दर स्वरों से बाजे।
कुन्डल झलक से रवि के
मद मान जा रहे हैं ॥३॥ मोहन

स्वर श्रुति से बांध कितने
ही तान को बनाते।
अति सप्त अतीत अनागत
स्वर राग सब जनाते।
कहते हैं यह शिवानन्द
सुध बुध भुला रहे हैं ॥४॥ मोहन...

भूला हुआ है राही - मुझे राह मां दिखादो।

* भजन *

रते वही हैं भव से
हरिगुण सदा जो गाते।
श्वास को अटल कर
सन्देह मन न लाते ॥ टेक ॥ तरते…

लियुग में कामधेनू
हरि गान को कहा है।
ब योग यज्ञ साधन
नहिं और कुछ रहा है।
ारद शुकादि शंकर
सब हैं यही बताते ॥१॥ तरते…

भु की अपार महिमा
चिन्तन करे जो मन से।
टते हैं नाम को ही
नित प्रीति के लगन से।

सुन्दर सुखद सुधामय
जिनको सुयश सुहाते ॥२॥ तरते···

सज्जन समूह सागर
हरि भक्ति गङ्ग धारा ।
कलिमल को नाश करती
यमुना नदी अपारा ।
हरि हर कथा त्रिवेणी
में जो हैं नित नहाते ॥३॥ तरते···

सब कामना रहित भी
रस भक्ति लीन रहते ।
प्रभु नाम सुधा ह्रद को
मन मीन किये गहते ।
कलि कल्प वृक्ष सम यह
नित नाम मन बसाते ॥४॥ तरते···

हरि ध्यान युग प्रथम में
दूजे में यज्ञ करते ।

द्वापर में पूजा कलि में
गुण गान से हैं तरते ।
नित प्रेम से शिवानन्द
प्रभु नाम को जपाते ॥५॥ तरते···

[२०]

* भजन *

सुमिरन विना हिं हरि के
दिन यों हिं जा रहे हैं ।
झूठे विषय जगत के
मन को लुभा रहे हैं ॥ टेक ॥ सु···

दर्शन विना हिं अँखिया
रहती नहीं दुखारी ।
लीला ललित जो प्रभु की
लगती नहीं है प्यारी ।

नहिं चित चकोर बन कर
मुख चन्द्र धा रहे हैं ॥१॥ सु…

गाते हैं गुण न मुख ही
नहिं कान को सुहाते।
रसना न रस को चखती
तन को नहीं है भाते।
हैं हृदय कुलिश जो
नहिं रस बहा रहे हैं ॥२॥ सु…

ः संग सज्जनों का
तीरथ अनेक फल से।
ा-दिन न प्रीति नूतन
प्रभु के चरण कमल से।
गांठ कर्म बन्धन
की नित गठा रहे हैं ॥३॥ सु…

ता नहीं निगम को
मुनि जन पुकार को भी।
स्वप्न यह जगत है

समझे गँवार तो भी।

हैं धन्य वो शिवानन्द

प्रभु गुण जो गा रहे हैं॥४॥ सु···

[२१]

* भजन *

जिस घर तुम्हें जाना है

उसमें लगन लगा लो।

बहकी हुई नज़र को

अपनी जरा सँभालो॥ टेक॥ जिस···

माँ बाप बहन भाई

सब से है बिछुड़ जाना।

होगा न कोई अपना

बदलेगा ये जमाना।

नाते सभी हैं जितने

प्रियतम से ही बना लो॥१॥जिस···

जाने का वहां वादा
अब हो रहा है पूरा।
अब तक न किया कुछ भी
जो भी किया अधूरा।
उस राह के गमन को
खरचा हि कुछ बचा लो ॥२॥ जिस...

सुख में सभी हैं साथी
दुख में नहीं दिखाते।
अपने हि स्वार्थ के वश
आँसू हैं सब बहाते।
विज्ञान ज्योति अपनी
इस तम में तुम जला लो ॥३॥ जिस...

रोने से और कुछ भी
होता नहीं किसी के।
आँखों पै स्वार्थ का है
परदा पड़ा सभी के।
खुदगर्ज है जमाना
इससे नजर छुपा लो ॥४॥ जिस...

कर वीन अपने मन का
अनहद कि ध्वनि मिला कर।
साधन के साथ बैठो
आसन सुदृढ़ जमा कर।
संयम नियम के भूषण
से साज सब सजा लो ॥५॥ जिस···

मिटता है दुःख सारा
जब नाद ब्रह्म पावे।
होता है वो अमर जो
सेवा में मन लगावे।
कहते है ये शिवानन्द
निज इष्ट को मना लो ॥६॥ जिस···

---

[२२]

"माया"

* भजन *

हो भक्ति क्यों तुम्हारी
माया नचा रही है।
विषयों के जाल में वो
सब को फसा रही है ॥ टेक ॥ हो…

हरती है मन को सब के
देखे जरा जो हँस कर।
जाती वो धर्म कोई
फिर पूछता न फस कर।
अपने ही रूप में यह
सब को रचा रही है ॥१॥ हो…

भरवा के स्वाँग नूतन
निशि दिन है यह नचाती।
दिन में न चैन मिलता
नहिं रात नींद आती।

गल डाल लोभ फाँसा
दर—दर फिरा रही है ॥२॥ हो…

सोये हुये किसी को
जाकर वहां जगाती।
कितनों को कर इशारा
ठग कर कहीं बुलाती।
तृष्णा तरङ्ग में ही
हरदम बहा रही है ॥३॥ हो…

बलवान इस से बढ़ कर
तुम बिन न और जग में।
बरजो तुम्हीं ये बाधा
जो है तुम्हारे मग में।
कहते हैं यह शिवानन्द
तुमरी कहा रही है ॥४॥ हो…

(गज़ल) * भजन *

दुनियां के ऐश मौज ने
प्रभु को भुला दिया।
अनमोल मनुज देह
को पा कर गमा दिया॥ टेक॥ दुनि''

जाता है समय जो चला
आता है फिर नहीं।
झूठे विषय कि चाह में
सब दिन बिता दिया॥१॥ दुनि''

वे काम न आयेंगे
लिया जिनका सहारा।
सब कुछ जिन्हों के
वास्ते अपना लुटा दिया॥२॥ दुनि''

मद काम क्रोध लोभ मोह

स्रोत से मिलकर।

तृष्णा तरङ्ग ने सभी

गौरव बहा दिया ॥३॥ दुनि···

साथी जो तेरे थे वो

तुझे छोड़ चल बसे।

उस शोक मोह ने

तेरे तन को घूला दिया ॥४॥ दुनि···

कहते हैं शिवानन्द

जो हरि शरण में आया।

उसने हि पाप पुण्य को

अपने मिटा दिया ॥५॥ दुनि···

---

* भजन *

नित बास करो मन मेरे
तुम प्रेम के बन में।
प्रभु के गुणों को गान
करूं सन्त सुजन में॥ टेक ॥ नित…

विज्ञान सरस जल जहां
हरि भक्ति कि धारा।
सन्तोष कि कुटिया
बनी रमणीय सघन में॥१॥ नित…

साधन सुगन्ध पुष्प
नियम घास से भरा।
प्रभु ध्यान का विकास
हि होता रहे तन में॥२॥ नित…

बाधा न कोई ताप से

न क्लेश कष्ट है।

आती न उदासी जहां

हरि भक्त के मन में ॥३॥ नित...

यमराज गणों से भि

कभी भय नहीं होता।

मिलती है भुक्ति मुक्ति

भि श्रद्धा के हि धन में ॥४॥ नित...

रहती है शिवानन्द

सदा ऋतु बसन्त की।

वो ही है नित बिहार

जो होवे सभि च्चण में ॥५॥ नित...

---

* भजन *

आया हूँ बड़ी चाह से कुछ करके जाऊँगा,
शिवानन्द की कृपा से प्रभु पाकर के जाऊँगा।

तुम प्रेम मयी दृष्टि से
इक बार देख कर।
मुझ पर भि करो अब
दया लाचार देख कर ॥ टेक ॥ तु...

करुणा निधान नाम को
सुन कर के तुम्हारे।
आया हूँ दीना—नाथ
का दरबार देख कर ॥१॥ तु...

खेवट तुम्हीं भव सिन्धु
के पद पद्म कि नैया।
करना मुझे भि पार
निराधार देख कर ॥२॥ तु...

[illegible] डूबने वाले का

सहारा नहीं रहा।

जो बह रहा मझधार

में है पार देखकर ॥३॥ तु···

नहिं और मेरा है कोई

मरज़ी है तुम्हारी।

तुम भूल गये प्यार

को बेज़ार देख कर ॥४॥ तु···

अब ये भि शिवानन्द

तुम्हारे हि हाथ है।

रूठे हि रहो या

मिलो सरकार देखकर ॥५॥ तु···

※ भजन ※

हे कृष्ण तुम्हीं प्राण
के मेरे अधार हो।
तुम रस भरी जीवन
मयी वीणा के तार हो ॥ टेक ॥ हे···

ये मन मेरा अब और
कहीं सुख नहीं पाता।
हो गति पति मेरे तुम्हीं—
तुमहीं बिहार हो ॥१॥ हे कृ···

सत भाव से कहता
हुँ तुम्हीं श्याम हो धनी।
अब मन को तुम्हारे
बिना कैसे करार हो ॥२॥ हे कृ···

छूटे तुम्हारी भक्ति

फिर आनन्द क्या रहा।

सुख मय समय वही है

तुम्हारा विचार हो ॥३॥ हे कृ...

कहे कौन शरण का

प्रताप भक्ति की महिमा।

जिस पर हो दया आपकी

भव दुख से पार हो ॥४॥ हे कृ...

जिसकी लगन है जिस से

शिवानन्द वो रहे।

मेरी लगन तुम्हीं से

है ये बढ़ अपार हो ॥५॥ हे कृ...

---

* भजन *

तन कि वीणा पै
प्रेम तार चढ़ावो अपने ।
ागन कि धुन को हि
हर बार बजावो अपने ॥टेक॥तन··

र्म का राग बना
कर्म ताल में रख कर ।
दार यश जो है प्रभु
का हि सुनावो अपने ॥१॥ तन··

ृष्ण का नाम कमल
पुष्प बनाकर सुन्दर ।
न के भौंरे को सरस
पान कराओ अपने ॥२॥ तन···

भक्त सत्संग सरित् में
हि नहा कर निशि दिन।
मोह मद काम क्रोध
मल को छुड़ावो अपने ॥३॥ तन···

यह शिवानन्द जगत्
जाल बिछाया जिसने।
वहि काटेगा फन्द
प्यार बढ़ावो अपने ॥४॥ तन···

---

* भजन *

बाँसुरी श्याम आज
कैसी बजाई तुमने।
हर लिया मन मेरा
तन सुध भि भुलाई तुमने ॥टेक॥ बां''

तभी लो दर्प चातुरी
वो कुल कि लाज रही।
समीर जब लो न बँशी
कि बहाई तुमने ॥१॥ बां''

मोहे खग मृग वो वृक्ष
सुर नर मुनि धुन सुन के।
भये सब मुग्ध मधुर
तान सुनाई तुमने ॥२॥ बां'''

तभी लों चाह शिवानन्द

विषय में रहती।
न जब लों आनी दया
दृष्टि दिखाई तुमने ॥३॥ वां···

[२६]

* भजन *

वनो में बृज के प्रेम
राम रचाया तुमने।
अपने भक्तों का दुःख
शोक मिटाया तुमने ॥ टेक ॥ व···

शस्त्र गहवाने कि
भीषम ने प्रतिज्ञा जो की
अपना प्रण छोड़ के
उनका हि निभाया तुमने ॥१॥ व···

आये दुर्वासा सहित
शिष्य के पाण्डव गृह में।
शाक के कण से हि
सब विश्व अघाया तुमने ॥२॥ व॰

युद्ध के बीच जभी पार्थ
ने मुख फेर लिया।
तभी रण भूमि में
गीता को सुनाया तुमने ॥३॥ व॰

जयद्रथ वध कि जो
अर्जुन ने प्रतिज्ञा कर ली।
बना के दिन को रात
सूर्य दिखाया तुमने ॥४॥ व॰

नयनानन्द शिवानन्द
रहे गोपिन के।
हो के बृज चन्द
रसानन्द बहाया तुमने ॥५॥ व॰

* भजन *

मन रे यह जानि हृदय
भजिये हरि चरण को ॥ टेक ॥ म···

ार से जो पात टूट पड़े
फिर न डार लगे।
ुर्लभ इस तन को पाय
सेइये भव हरण को ॥१॥ म···

कबहुँ सुखी कबहुँ विपद—
विपद से हि सम्पद फिर।
तन धरे को यह स्वभाव
ताकिये हरि शरण को ॥२॥ म···

ऋतु हेमन्त शिशिर
हेम पड़त ढरत ग्रीष पुनि।

जन्म पाय बाढ़त तन
अन्त होत मरण को ॥३॥ म…

तरुवर फल फूल फरै
अपने काल पाय सदा।
धूल उड़त कबहुँ सूखि
सरवर पुनि भरन को ॥४॥ म…

कहैं शिवानन्द चन्द्र
बाढ़त घटि जात फेरि।
तज प्रतीति दुख सुख
हरि गाइये भव तरण को ॥५॥ म…

---

* भजन *

ये संसार सारा
है प्रतिमा तुम्हारी।
यही बात भक्तों
ने सब ने विचारी॥ टेक॥ ये···

जिधर देखता हूँ
तुम्हीं दृष्टि आते।
नज़र में नहीं और
कुछ हैं हमारी॥१॥ ये···

खिले पुष्प हैं जो
हरे लाल पीले।
कहे कौन माया
कि महिमा है भारी॥२॥ ये···

तुम्हारी हि छवि

एक छाई है सब में।

दमकती चमकती जो

हैं सब ये क्यारी ॥३॥ ये॰

जो राजा कोई

और भिक्षुक कोई है।

ये सब है तुम्हीं ने

हि लीला पसारी ॥४॥ ये॰

जगत सब है तुम में

तुम उस में नहीं हो।

सभी में हो सब

से अलग निर्विकारी ॥५॥ ये॰

तुम्हीं इन्द्र शङ्कर

वो ब्रह्मा तुम्हीं हो।

तुम्हीं जन कि

रक्षा करो चक्रधारी ॥६॥ ये॰

शिवानन्द कहते

हैं जन जो तुम्हारे।
तुम्हीं को हैं भजते
सदा चित में धारी ॥७॥ ये···

---

[३२]

* भजन *

पिलाना मुझे भी
वही प्रीति प्याली।
धरी है जो सनकादि
शुक देव वाली ॥ टेक ॥ पि···

भजूँ मैं तुम्हें और

सब भूल जाऊँ।
झलकती हो तेरी
ही आँखों में लाली ॥१॥ पि···

तुम्हारा बनूँ जिस
से सब लोग जाने।
तुम्हारे ही हो
नाम की छाप डाली ॥२॥ पि···

हृदय से हटे मोह
माया का परदा।
जो काटे सभी
कर्म बन्धन की जाली ॥३॥ पि···

जो पीते ही तन मन
कि सुध बुध भुलाये।
वो है सब रसों से
सदा ही निराली ॥४॥ पि···

पिलाते हो भक्तों

को भर—भर के अपने।
मेरी भी परी है ये
छोटी सि खाली ॥५॥ पि...

शिवानन्द कहते
उसी से ही भर दो।
सुधा प्रेम रस की
जो तुम ने निकाली ॥६॥ पि...

---

* भजन *

जो त्याग कर्मों का और करना
हैं श्रेय दोनों हिं तुम ये जानो।
न करने वालों से करने वाला
हि पूज्य होता है इसको मानो॥टे

न द्वेष करता किसी से जो है
नहीं है जिसको किसी कि इच्छा।
वो कर्म बन्धन से मुक्त होता
सुगम है रीती इसी को छानो॥१॥ जो

न सांख्य को और न योग को ही
पृथक् बताते प्रवीण पण्डित।
सदा हि दोनों का एक फल है
जिसे भि चाहो उसे हि ठानो॥२॥ जो

नहीं जो होते हैं कर्म योगी
उन्हें है कर्मों का त्याग दुष्कर।
जो योग युत हैं उन्हीं को मिलता
है सर्व व्यापक सभी ठिकानो ॥३॥ जो···

कहें शिवानन्द जो युक्त योगी
वो सँयमी हैं विशुद्ध मन से।
सभी जगत को जो ब्रह्म जाने
न होते कर्मों में लिप्त आनो ॥४॥ जो···

✻ भजन ✻ (भैरवी)

तर्ज़ तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो तुम्हीं हो बन्धु सखा तुम्हीं

न भूल जाना उसे कहीं अब
शरण में जो है पड़ा तुम्हारी।
तुम्हीं हो भक्तों के नाथ रक्षक
तुम्हीं हो दुष्टों के दण्डकारी ॥टेक॥ न...

तुम्हारि माया फिराति सब को
बदलति हरदम है रङ्ग अपना।
तुम्हीं चमकते हो उसके अन्दर
तुम्हारि घट—घट में है उजारी ॥१॥ न...

तुम्हीं सगुण हो तुम्हीं हो निर्गुण
पिता तुम्हीं हो तुम्हीं हो स्वामी।
तुम्हीं को कहते हैं विश्व व्यापक
तुम्हीं कहाते हो निर्विकारी ॥२॥ न...

कृपा कि नज़रों से नाथ देखो

परम कृपालू हो भक्त वत्सल ।

अनेक विघ्नों से घिर रहा हूँ

फसा हुँ माया के जाल भारी ॥३॥ न...

अथाह बहती है भ्रम नदी यह

नज़र न आता कहीं किनारा ।

कहें शिवानन्द न डूब जाये

निपट पुरानी है नाव सारी ॥४॥ न...

---

[१५]

*** भजन ***

उठो मुसाफि हुआ सवेरा
समय ये डँका बजा रहा है।
जो शोक रोगों को साथ लेकर
तुम्हीं को लेने वो आ रहा है ॥ टेक ॥ उ॰

न छोड़ता है कभी किसी को
जगत में जो भी हुआ है पैदा।
किसी को करके मृतक से जिन्दा
किसी को मुरदा बना रहा है ॥१॥ उ॰

वही है मालिक सभी भुवन का
रचाया उसने हि खेल सारा।
किसी के रखता मुकट है सर पर
किसी को वन—वन फिरा रहा है ॥२॥ उ॰

जो आज जिसको फटी है टोपी
तो कल दिखाता धनी वही है।

कभी धनी को भि कर के नङ्गा
वो नाच सब को नचा रहा है ॥३॥ उ···

गे देश तेरा नहीं है अपना
नहीं है तेरा कहीं ठिकाना।

रहेगा कितने दिनों इहां पर
न मन में अपने लजा रहा है ॥४॥ उ···

मिला है नर तन ये पुण्य फल से
गमा रहा है इसे तु सो कर।

शिवानन्द न काम आवे
जो साज अपने सजा रहा है ॥५॥ उ···

* भजन *

सभी बजाते हैं अपनि वीणा
चढ़ा के अपना हिं तार समझो।
नहीं है कोई जहाँ में साथी
सभी को मतलब का यार समझो ॥टेक॥स···

पिता है कोई तो पुत्र कोई
ये मित्र बान्धव जो हैं कहाते।
सभी के मन में भरा है स्वारथ
इसी से सब का हि प्यार समझो ॥१॥ स···

अनेक जन्मों के पुण्य फल से
जो कर्म भूमी में जन्म पा कर।
न गाय प्रभुके सुने न गुण यश
तो उसको पृथ्वी का भार समझो ॥२॥स···

। सन्त सच्चे सदा हैं प्रेमी

वो हार को ही हैं जीत कहते।

न प्रेम प्रभु का है जिसके मन में

तो जीत उसकी भि हार समझो ॥३॥ स···

न देख भुले तु इसको बुल—बुल

ये जान खाते हैं गुल चमन के।

जिन्हों ने रङ्गत बदलति देखी

वो गुल को कहते हैं ख़ार समझो ॥४॥ स···

कहें शिवानन्द उसी को जानो

खिलाया जिसने है इस चमन को।

झलक रहा है जो सब के अन्दर

उसी को जीवन का सार समझो ॥५॥ स···

[.]

※ भजन ※

ाजन बिन प्रभु के
ये तन बेकार है ।
ाल माया का
बना संसार है ॥ टेक ॥ भ...

ँस रहा है
चार दिन सुख देख कर ।
रोयेगा आखिर
सदा शिर टेक कर ।
यह ठगों का
ही लगा बाजार है ॥१॥ भ...

जो तुझे करना हो
करले वह यतन ।

डूबने वाला है
अब यह नाव तन।
दो घड़ी का और
अब दीदार है ॥ २ ॥ भ...

तू समझता है
जिसे अपना यहां।
ये है मतलब
से भरा सारा जहाँ।
है कोई सेवक
कोई सरकार है ॥ ३ ॥ भ...

दिल को दुनिया
में नहीं बरबाद कर।
प्रेम से प्रभु के
इसे आबाद कर।
प्रेम सच्चाही
शिवानन्द प्यार है। ४ ॥ भ...

[३८]

* भजन *

[ताल कहरवा भैरवी]

हे प्रभु अबदेखो हमारी ओर ॥ टेक ॥ हे...

दया दृष्टि करनेक निहारो ।
तुम से कहूँ कर जोर ॥ १ ॥ हे...

शिवानन्द गुण सुन कर तुमरे ।
रहत हूँ द्वारे अगोर ॥ २ ॥ हे...

---

* भजन *

[ताल दादरा भैरवी]

बिन काँदो कमलनी कैसे रहे ॥ टेक ॥ बिन···

तन बिन प्राण—प्राण बिन तन ज्यों ।
जल वियोग नहिं मीन सहे ॥ १ ॥ बिन···

शिवानन्द गति भई प्रभु वैसी ।
बिन दर्शन नहिं धीर धरे ॥ २ ॥ बिन···

———

हे नाथ तुमने मुझको
मन से हि क्यों बिसारा।
अपने नयन कमल से
कर दो ज़रा इशारा ॥ टेक ॥ हे···

तुम जानते हो सब की
जिसने भी जो किया है।
कर्मों पै मेरे अब तक
नहिं ध्यान भी दिया है।
तारे पतित हो सब ही
करके मुझे किनारा ॥१॥ हे···

योनी अनन्त फिर कर
पाया है पद शरण को।
मुझ से छुड़ा रहे क्यों

अपने कमल चरण को।
अवसर भि ये गया तो
फिर क्या रहा सहारा ॥२॥ हे···

पतितों में सब से बढ़कर
मुझको अगर बताते।
तुम भी तो इस जगत में
पावन पतित कहाते।
कहते यही शिवानन्द
यह है विरद तुम्हारा ॥३॥ हे···

मेरी तो गति हो तुम ही
तुम बिन न सुख को पाऊँ।
कहला के अब तुम्हारा
किसकी शरण में जाऊँ।
आये शरण में जो भी
किसको न तुमने तारा ॥४॥ हे···

[४१]

* भजन *

[ताल कहरवा]

हे प्रभु तुम काहे हमे बिसरावो ॥ टेक ॥ हे...

तारे पतित समूह सदा तुम ।
अब काहे सकुचावो ॥१॥ हे...

सब तजि तुमरे शरण में आयो ।
अब नहिं बाँह छुड़ावो ॥२॥ हे...

शिवानन्द अब कहो कहँ जाये ।
अपना जन अपनावो ॥३॥ हे...

---

[४२]

* भजन *

[ताल दादरा]

श्माम दरस को
तरस रहे नयना ॥ टेक ॥ श्या...

पल—पल हम को
युग सम बीतत ।
यह मन धीर धरे ना ॥ १ ॥ श्या...

शिवानन्द प्रभु
छिन अवलोके ।
अब चित चैन परे ना ॥ २ ॥ श्या...

[४३]

* भजन *

अब तो नयनों में
श्याम ही समाय रहते हैं।
छबि मोहन कि हृदय में
बसाय रहते हैं ॥ टेक ॥ अब···

भला बुरा कहे कोई
भि जिसका जी चाहे।
लगन भि मन में
उन्हीं की लगाय रहते हैं ॥१॥ अब···

वो कमल नयन चित
के चोर न चित से टरते।
नट वर वपु वेश
ललित जो बनाय रहते हैं ॥२॥ अब···

मन सदा चक्र चढ़ा

सा रहे न कुछ भाये।

श्याम के हाथ ही

तन मन बिकाय रहते हैं ॥३॥ अब···

गले वनमाल कुटिल

अलक कमल मुख सोहे।

नेत शिवानन्द कि

सुध बुध भुलाय रहते हैं ॥४॥ अब···

---

[४३]

* भजन *

[भजन ताल कहरवा]

जाल माया का बड़ा बलवान ।
जिसने मोहा है सारा जहान ॥ टेक ॥ जा…

सनकादिक ऋषि मुनि जन मोहे ।
नारद चतुर सुजान ॥ १ ॥ जा…

दया दृष्टि जिस पर हो तुम्हारी ।
सोई छुटे मतिमान ॥ २ ॥ जा…

शिवानन्द की तुम सुधि लो प्रभु ।
बिसरे सब औसान ॥ ३ ॥ जा…

* भजन *

करके दया कि दृष्टि
तुमने जिसको निहारा।
डूबा नहीं भव नद में
मिला उसको किनारा ॥ टेक॥ क…

कहिं रङ्क सुदामा को
पल में राव—बनाया।
पाण्डव कि कराई
विजय हो करके सहारा ॥१॥ क…

लङ्का में विभीषण को
दिया राज है जाकर।
ध्रुव को भि दिया पद
जो है वैकुण्ठ का द्वारा ॥२॥ क…

कौरव सभा में
द्रोपदी कि लाज बचाई।
अब तक है शिवानन्द को
क्यों तुमने बिसारा ॥३॥

[४६]

* भजन *

कर्म को करते हैं योगी
फल कि इच्छा छोड़ कर।
तन वो मन से बुद्धि से
सब इन्द्रियां निज ओर कर ॥ टेक ॥कर्म

युक्त तज कर कर्म फल को
शान्ति पाता नैष्ठिकी।

कर्म से बँधता अयोगी
फल में इच्छा जोड़ कर ॥१॥ कर्म···

त्याग कर कर्मों को मन से
सुख से रहता है वशी ।
छोड़ कर करना कराना
सब से ही मुख मोड़ कर ॥२॥ कर्म···

कर्म या करतापने को
भी नहीं रचता प्रभु ।
प्रकृति का हि प्रवाह फल
सँयोग लाय हिलोर कर ॥३॥ कर्म·

पुण्य पापों को शिवानन्द
प्रभु नहीं करता ग्रहण ।
मोहता है जीव को
अज्ञान ज्ञान निचोड़ कर ॥४॥ कर्म···

[शुभ प्रार्थना]

(१)

गङ्गा तट आनन्द कुटी पर
गूँथे लहरों की झाला।
शिवानन्द प्रभु खड़े हैं लेकर
सुन्दर गुण मणि की माला॥

(२)

जगत अथाह अनन्त नदी यह
है अति भीषण धार।
निपट झाँझरी नाव हमारी
तुम्हीं करो प्रभु पार॥

(३)

अपनी झलक दिखा के प्रभु जी
प्रेम कि ज्योति जगा देना।

दया दृष्टि करके तुम अपनी
अपना जन अपना लेना ॥

(४)

पहुँचावो प्रभु भक्त जनों से
अपने भरे हुये दरबार।
प्रेम—मयी वीणा जहँ करती
तुमरे गुण गण की झँकार ॥

[४८]

* भजन *

प्रभु को भुला दिया
स्वयं सरकार समझ कर।
पीता है विषय रस को
सुधा सार समझ कर ॥ टेक ॥ प्र...
यह ख्याल के चमन कि

चमक देख लुभाया ।
इस खार में ही फस गया
गुल ज़ार समझ कर ॥१॥ प्र···

भूषण है काम क्रोध
अहङ्कार की माला ।
यह फाँस गले डाल
लिया हार समझ कर ॥२॥ प्र···

पद नख प्रभु के चन्द्र
मन चकोर जो तज कर ।
अङ्गार विषय खा रहा
आहार समझ कर ॥३॥ प्र···

जो जग का शिवानन्द
हृदय मोह बसाता ।
वञ्चित हुआ है वो
कपट को प्यार समझ कर ॥४॥ प्र···

* भजन *

नाद अनहद ध्वनि सुरीली
घट के भीतर बज रही।
मस्त मन होता सुने से
तन गगन में सज रही ॥ टेक ॥ नाद...

घन वितत वीणा मधुर
झँकार मुरली मन हरे।
शङ्ख झिंगुर भेक की
मिलकर सभी ध्वनि छज रही ॥१॥ नाद...

प्रथम होता शब्द मिल जुल
बन्द कर श्रुति जो सुने।
प्रकृति की इस गगन ध्वनि से

और ध्वनि सब तज रही ॥२॥ नाद…

जो सुने प्रति दिन शिवानन्द
नाद हो विकसित हृदय ।
मन्द से भी मन्द वह
स्थूल ध्वनि को तज रही ॥३॥ नाद…

[५०]

* भजन *

मिलने से प्रिय नहिं हर्ष है
व्याकुल अप्रिय पाकर न जो ।
नित ब्रह्म विद विद्वान थिर मति
ब्रह्म में स्थित है वो ॥ टेक ॥ मिल…

जो बाहरी विषयों को तज

पाता है सुख नित आत्म में।
वहि ब्रह्म योग से युक्त अक्षय
सुख को पाकर सुखी हो ॥१॥ मिल···

स्पर्श के सुख भोग जो
दुख के हि कारण हैं सभी।
बुध जन नहीं रमते वहां
है आदि जिसका अन्त को ॥२॥ मिल···

यह तन के छुटने से प्रथम
जो सहन कर सकता है जन।
इस काम क्रोध के बेग को
योगी वही वो सुखी है सो ॥३॥ मिल···

अपने हि अन्तर में जो सुख
पाता है और आराम भी।
यह ब्रह्म हो जाता है अन्तर—
ज्योति सारे दुःख खो ॥४॥ मिल··

नहि पाप जिसमें है शिवानन्द
पद को पाता है वही।
सब जीव हित जल से जो करता
स्वच्छ अपने मन को धो ॥५॥ मिल…

[५१]

* भजन *

तर्ज:- [illegible]

निज ज्ञान से अज्ञान
जिसने नाश किया है।
उसने जगत का दूर
सकल त्रास किया है ॥ टेक ॥ नि…

फिर वो हि दिखाता है
उसे अन्तर आत्मा।
आदित्य रूप ज्ञान
जो प्रकाश किया है ॥१॥ नि…

मन बुद्धि को लगा
प्रभु में लौटता नहीं।
जिसने हृदय को स्वच्छ
कर आकाश किया है ॥२॥ नि···

ब्राह्मण वो गाय हस्ति
में समता जो देखता।
चान्डाल कुकुर में
वही विश्वास किया है ॥३॥ नि···

होती विजय उसी कि
शिवानन्द जगत में।
उस—सम प्रभु में
जिसने ही निवास किया है ॥४॥ नि···

---

* भजन *

बजेगी मधुर बाँसुरी
कब तुम्हारी।
जगा प्रेम की ज्योति
करता उजारी ॥ टेक ॥ ब···

थि व्याकुल भईं जिसको
सुन बृज कि बनिता।
विरह की भरी धुन
बजाती जो सारा ॥१॥ ब···

सुधा सार के सार
से भी है बढ़ कर
जो हरती है मन

शिवानन्द कहते
वही धुन सुना दो।
लगी धुन रहे
जो तुम्हीं से हमारी ॥३॥ व···

[५३]

* भजन * (भागीरथी गंगा)

चलो मन करें दर्श
गङ्गा कि धारा।
मनोहर है भागी—
रथी का किनारा ॥ टेक ॥ च···

जो चन पर्वतों की

छटा है निराली।
बना कैसा सुन्दर
है प्राकृत नजारा ॥ १ ॥ च॰

वो रमणीय तट पर
रहें साधु सज्जन।
जिन्हों ने है जीवन
को अपने सँवारा ॥ २ ॥ च॰

जो बैकुण्ठ से बदरी
बन होती आई।
जहाँ ब्रह्म का कुन्ड
है हरि का द्वारा ॥ ३ ॥ च॰

कहीं तो बसी है
किनारे पै नगरी।
नगर है कहीं
जिसमें बजता नगारा ॥ ४ ॥ च॰

शिवानन्द कहते
तुम्हीं गति हो गङ्गा।
तुम्हारा हि मैने
लिया है सहारा ॥ ५ ॥ च...

[५४]

* भजन * गंगा स्तुति

लगी है लगन मन
को गङ्गे तुम्हारी।
दरश बिन तुम्हारे
हूँ रहता दुखारी ॥ टेक ॥ ल...

ये प्रकृति कि प्रतिमा
तुम्हारी है जग में।

परश कर तुम्हें
सब हि होते सुखारी ॥ १ ॥ ल···

मनुज देवता नाग
करते हैं पूजन।
त्रिपथ गामिनी तुम
सभी की हो प्यारी ॥ २ ॥ ल···

ये अमृत मयी जल
कि स्वच्छन्द धारा।
त्रिविध ताप के
नाश की है कटारी ॥ ३ ॥ ल···

सभी पापियों के
हरे पाप क्षण में।
पतित पावनी नाम
की है उजारी ॥ ४ ॥ ल···

शिवानन्द वर
माँगते हैं ये तुम से।
न छूटे लगन
जो लगी है हमारी ॥ ५ ॥ ल···

[५५]

[नोटः—यह गाना प्रथम पुष्प का है परन्तु प्रेस की भूल से आधा ही छपा था। अतः इस द्वितीय पुष्प में दुबारा पूरा छापा जाता है।]

* भजन *

मेरा भव सिन्धु में
कब तक शुमार बाकी है।
प्रभु कह दो ज़रा अब
क्या गुबार बाकी है ॥ टेक ॥ ॥१॥ मे···

चाह सुख की नहीं ग़म
है नहीं ज़रा दुख का।

मुझे तो आप का हि
एतबार बाकी है ॥ २ ॥ मे…

नहीं संसार में दुख के
हि सिवा कुछ देखा।
प्रभु अब आप का हि
इन्तज़ार बाकी है ॥३॥ मे…

बन्धु वा मित्र जगत में
सभी झूठे निकले।
देखना आप का हि
अब करार बाकी है ॥४॥ मे…

मुझे भाया न कोई
मैं न किसी को भाया।
अब तो इस जग में
तुम्हारा हि प्यार बाकी है ॥५॥ मे…

इह तन्त्री के तो सब

और तार टूट गये।

अब तो इक प्रेम का

तेरा हि तार बाकी है ॥६॥ मे…

नहीं है प्रेम शिवानन्द

को तन धन जन से।

राम अब आप का हि

बस आधार बाकी है ॥७॥ मे…

[५६]

* भजन *

रे मन इसी से तन को सज

प्रभु प्रेम योग शृङ्गार है।

यह मनुज तन तरणी मिली

अब कर यतन तो पार है ॥ टेक॥ रे म…

नहिं टूट जाये देखना

जग झँझटों में ये कहीं।

प्रभु प्रेम माला से जुड़ा

जीवन जो माला तार है ॥१॥ रे म...

दुनियां के रागों में न भूले

प्रभु लगन की रागिनी।

करती रहे वीणा मधुर स्वर

गान से झँकार है ॥२॥ रे म...

कहते शिवानन्द प्रीति प्रभु की

है पुरातन से लगी।

भव जाल में भी जो न छूटे

वही सच्चा प्यार है ॥३॥ रे म...
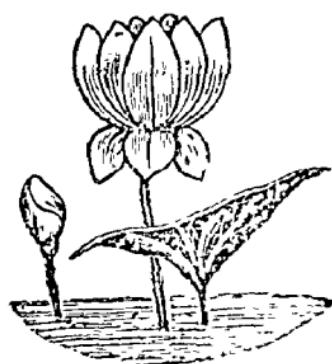
योग-वेदान्त

(हिन्दी मासिक पत्रिका)

वार्षिक मूल्य ३।।।) रु० आरण्य विश्वविद्यालय की ओर से प्रकाशित यह मासिक पत्रिका हमारे पूर्वजों के विचारों का प्रतिनिधित्व करती है। आज के युग में यही एक मासिक पत्रिका है, जो योग-वेदान्त के व्यावहारिक ज्ञान को सरल और सुबोध-गम्य भाषा में प्रचारित करने का प्रयत्न कर रही है। इस में सभी आध्यात्मिक विषयों को स्थान दिया जाता है और साथ-साथ जनता के लिये उपयोगी विचार भी प्रकाशित किये जाते हैं।

पत्रिका प्रतिमास प्रकाशित होती है और इसका साल जुलाई से प्रारम्भ होता है। चन्दा भेजने का पता:—

व्यवस्थापक, योग-वेदान्त (मासिक पत्रिका)
आनन्द कुटीर (ऋषिकेश)

आरोग्य जीवन

(आरोग्य और स्वास्थ्य शास्त्र की प्रतिनिधि)

आरोग्य शास्त्र का प्रचार करने के लिए यह मासिक पत्रिका आरण्य विश्वविद्यालय की ओर से प्रकाशित की जाती है।

इस में श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के विचारों के साथ-साथ अन्य लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों के विचार भी प्रकाशित किये जाते हैं। प्राचीन चिकित्सा की प्रणाली को सु-प्रचारित करती हुई यह पत्रिका सभी प्रकार के रोगों के निर्मूलन का उपाय सुगम रूप में प्रकाशित करती है।

वार्षिक मूल्य केवल ३।।।) रु० । पृष्ठ संख्या ३२ ।

पताः—व्यवस्थापक, आरोग्य जीवन

आनन्द कुटीर (ऋषिकेश)

जीवन ज्योति	....	१) रु०
चैतन्य ज्योति	....	६) रु०

मिलने का पता:—

शिवानन्द प्रकाशन मण्डल,

आनन्द कुटीर (ऋषिकेश)

चैतन्य ज्योति

(प्रामाणिक विवेचनात्मक आध्यात्मिक उपन्यास)

श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के जीवन पर प्रकाश डालने वाला यह ग्रन्थ ४५० पृष्ठों में एक कहानी को कहता है और २०वीं शती के महान् की गाथा को उपन्यास के रूप में उपस्थित करता है।

कहानी रोचक है और साहित्य की दृष्टि से भी सुसम्पन्न है, जो आपके परिवार की अमर गाथा हो जायगी।

मूल्य : ६) रु०

मिलने का पता:—

शिवानन्द प्रकाशन मण्डल,

आनन्द कुटीर (ऋषिकेश)

जीवन ज्योति

(लेखकः····श्री स्वामी शिवानन्द सरस्वती)

जीवन ज्योति के पाठकों का जीवन पथ सर्वदा ज्योतित रहेगा और उनको अन्धकार में पथ खोजने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी—क्यों कि जीवन ज्योति मनुष्य जीवन के अन्धकार अज्ञान का निवारण करने के विचारों को लेकर अग्रणी हुई है। पुस्तक उपादेय है। मूल्य केवल १) रु० ।

मिलने का पता:—
शिवानन्द प्रकाशन मण्डल,
आनन्द कुटीर (ऋषिकेश)

दिव्य जीवन मण्डल का कार्य आपका कार्य है

आप भी इस महत्वपूर्ण कार्य में सहयोग दे सकते हैं

१. दिव्य जीवन मण्डल के विश्वविस्तार के लिये

संरक्षक बनें	....	५०००) रु० (शुल्क
आजीवन सदस्य बनें	....	१०००) रु०
सहयोगी बनें	....	५००) रु०
साधारण सदस्य बनें	...	७) रु०

२. दिव्य जीवन (अङ्गरेजी मासिक) के

संरक्षक बनें ... १०००) रु० (शुल्क)

आजीवन ग्राहक बनें .... ५००) रु०

सहयोगी बनें ... १००) रु०

साधारण ग्राहक बनें .... ३) रु० (वार्षिक)

३. ज्ञान यज्ञ में आहुति दें—दक्षिणा दें

एक पुस्तक प्रकाशित करवाकर १०००) रु०

एक पुस्तिका प्रकाशित करवाकर १००) रु०

एक पत्रिका प्रकाशित करवाकर ३०) रु०

४. शिवानन्दाश्रम अन्नक्षेत्र के लिये द्रव्य दें

एक दिन महात्मा भोजन के लिए १०००) रु०

मासान्त दिन में दरिद्रनारायण

भोज के लिए ३००) रु०

५. श्री विश्वनाथ मन्दिर में नित्य पूजा भेंट चढ़ाएं

(आजीवन) प्रति मास एक दिन की पूजा के लिए ५०० रु०)

एक दिन की पूजा के लिए १५) रु०

६. शिवानन्दाश्रम में अभ्यागतों, तीर्थयात्रियों के लिए

कुटियायें बनवायें ... २०००) रु० प्रति कुटिया

(१० × १२)

७. "आरण्य विश्वविद्यालय" के सम्पर्क में आवें

हिन्दी मासिक पत्रिका के

संरक्षक बनें	...	४००) रु० (शुल्क)
साधारण सदस्य बनें	...	३।।।)रु० (वार्षिक)

८. "आरण्य विश्वविद्यालय" (अंगरेजी साप्ताहिक) का अध्ययन करें

साधारण सदस्य बनें	...	२) रु० तिमाही चन्दा
(और) योग शिक्षा लें	....	३।।।) रु० अर्द्ध वार्षिक
(और) शास्त्र चर्चा करें	....	६।।) रु० वार्षिक

मंत्री,
दिव्य जीवन मंडल
आनन्द कुटीर, (ऋषिकेश)

—

॥ हिमाञ्चलीय दिव्यामृत ॥

(शिवानन्द आयुर्वेदिक औषधालय)

प्रभावशाली और प्रामाणिक औषधियां

जिनका निर्माण शुद्ध-हिमाञ्चलीय जड़ी-बूटियों द्वारा, शिवानन्दाश्रम में होता है।

शुद्ध शिलाजीत

रक्त-शोधक, शक्तिवर्धक औषधि मूत्र-विकारादि सर्व-साधारण रोगों से आकुल रोगियों की जीवन-दात्री। २) रु०, ५) रु० तथा १०) रु० की बोतलों में प्राप्त हो सकती है।

च्यवनप्राश

चर्बी को शुद्ध करती, स्मरण-शक्ति, दिमाग़ी ताक़त, धारणा शक्ति को बल देती, पाचन-शक्ति को विकसित करती रक्त-गुण को उत्तम करती है। पतन सम्बन्धी रोगों के लिए बहुत ही उत्तम है। पाव भर और सेर भर के डिब्बों में २।) रु० और १०) रु० के मूल्य पर मिलती है।

ब्राह्मी-आंवला-शीतल तेल

स्नायुओं को बल देती, ओजस्विता को तेज देती, अन्तस्तल की उष्णता को शीतल करती है। अति चिड़चिड़े और स्मृति-हीन स्वभाव शाली व्यक्तियों के लिए उपयुक्त, ग्रीष्म-ऋतु में अत्यावश्यकीय है। ४) रु० दाम पर मिलता है।

दन्त-रक्षक मंजन

क्रमिनाशक, हिलते दांतों को मजबूत बनाता है। मसूड़ों की सूजन को आराम देता, रक्त-प्रवाह को बन्द करता, साधुओं का अन्वेषित मन्जन, ।) आने और ॥) आने के पैकेट और १।) के टिन में मिलता है।

ब्राह्मी बूटी

यह एक पर्वतीय बूटी का नाम है। जो रात को पानी में मिलाकर, सुबह अवलेह के रूप में, कुछ बादाम, मिश्री और दूध के साथ मिलाकर पी जा सकती है। दिमाग को ठण्डा करती है। यह बूटी ॥) आने और १) रुपये के पैकेट में मिलती है।

दिव्यामृत त्रिचूर्ण

खांसी और ठण्ड की तासीर को नष्ट करता है सुबह और शाम चाय की मानिन्द बनाकर पीना चाहिए, ।) और ॥) आने के पैकेटों में मिलता है।

क्षुधा वर्धक

क्षुधा शक्ति को बढ़ाता, अजीर्णोद्धार करता, मनुष्यों की प्राकृतिक भूख को खोलता है जिसके पेट में अजीर्ण की बीमारी हो, वे ॥) आने और १) रू० के पैकेट में मंगा सकते हैं।

ब्रह्मचर्य सुधा

एक सफल औषधि, जो वीर्य पतन सम्बन्धी स्वप्नादि-दोषों में

हितकर सिद्ध हुई है, जो वीर्य और ओज-शक्ति को नवजीवन का दान देती है। १) रू० और २) रू० के पैकेटों में मिल सकती हैं।

विशेष

डाकव्यय अलग। १०) रू० से अधिक मांग होने पर २५ प्रतिशत अग्रिम (पेशगी) व्यय भेजिए। और पता साफ और शुद्ध अक्षरों में लिखिये।

मैनेजर—शिवानन्द आयुर्वैदिक फार्मेसी,
आनन्द कुटीर पो० ऑ०, ऋषीकेश
(जि० देहरादून) हिमालय

हिमाञ्चलीय दिव्यामृत
(शिवानन्द आयुर्वैदिक औषधालय)

चन्द्र प्रभा

आयुर्वैदिक-प्रणाली की प्रमुख औषधि है। केवल मात्र खनिज पदार्थ ही नहीं, वरन हिमगिरि के अरण्यों में प्राप्त, बूटियों के मेल से इस अमृतमयी औषधि का जन्म हुआ है। क्यों न ऐसा हो, जबकि हमारे पूर्वजों की वाणी ने कहा कि चन्द्रप्रभा कायिक, मानसिक दुर्बलताओं, मूत्रादि-विकारों, गांठ बन्धन, (पेट में

आंतों के अन्दर) और शरीर दर्द के रोगों, बवासीर, दिल की बीमारी जैसे असाध्य रोगों की निवृत्ति को सफल-साध्य बना देती है। और ओजदायी स्वास्थ्य-दात्री औषधियों की जननी

कैसे इस्तमाल करें

औषधि बरतने के पहले विरेचन से पेट साफ करलें और तब नित्य-प्रति १ गोली सुबह और १ शाम हल्के गर्म जल या दूध के साथ ले लें। जहां तक बने, मिर्च, तेल, खट्टी, मीठी चीजों का उपयोग न करें। ताकतवर के लिए तो रोज़ाना सोने के पहले। १ गोली काफ़ी होगी। मूल्य २) प्रति तोला।

च्यवनप्राश

आयुर्वैदिक-शास्त्र के अनुसन्धानों में यह एक नई सफल औषधि है, जिसका रोग-निर्माण-जीवन, हिमालयवर्ती-अरण्य-प्रदेश की जड़ी बूटियों से हुआ है। सच पूछा जाय तो आज यही एक सफल औषधि है, जो T. B. (क्षयरोग) सदृश भयंकर रोग को समूल नष्ट कर सकती है। फेफड़ों की शुद्धी, रक्त की पवित्रता धमनियों का सिंचन, हड्डियों की मजबूती, कच्चे दिमाग़ी नाज़ुक बदन का नव जीवन तो इसके गुण हैं ही, परन्तु शरीर-सम्बन्धी कोई रोग ऐसा नहीं, जिसका उपशमन इससे न हो सकता हो।

कैसे इस्तमाल करें

रोजाना सुबह आधे सेर गरम दूध या पानी के साथ १ चम्मच माप के बराबर ले लीजिए। दाम २॥)रू० और १०)रू०।

ब्रह्मचर्य सुधा

स्वप्नदोष, शारीरिक-दुर्बलता, मानसिक-पतन, स्मृतिलोप, शक्तिहीनता को समूल नष्ट करने के विचार से:—

१. औषधि-ज्ञाता परामर्श दाताओं की सहायता लेकर।

२. आयुर्वैदिक-पद्धति के अनुसार।

३. शक्ति खोए नवयुवकों को वर स्वरूप।

४. उत्तरावर्त्तीय-हिमगिरि-स्थित बूटियों का सत्व लेकर।

५, जीवन के नैराश्य-सागर में डूबे नवयुवकों की चरित्र शक्ति की नौका की एक मात्र अवलम्ब, यह ब्रह्मचर्य सुधा हमने तैयार की है।

कैसे इस्तमाल करें

दवाई को लेने के पहले पेट साफ करलें फिर ३ माशा के करीब दवाई १ छटांक ठंडे दूध में मिला कर पीलें। फिर ३ छटांक दूध बाद में पीलें दवाई सूर्योदय के पीछे लेवें तो अत्युत्तम। ज्वर होने से दवाई का तत्क्षण उपयोग न करें। बीमारी ज्यादा होने से ४० दिन दवाई का प्राथमिक उपयोग आवश्यकीय है। मिर्ची, प्याज, समागम-सम्बन्धी दुर्गुण निषिद्ध मानिए। कौपीन (लंगोट) का इस्तेमाल करें। २ तोले का दाम १) रु०, ४ तोले का दाम २) रु०।

हमने और दवाइयां भी बनवाई हैं:—

१. शुद्ध शिलाजीत। दाम २), ५), १०) रुपया।